महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदानएवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत

डा0 विनोद कुमार,
सहआचार्य, दीन दयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र,
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रूद्रपुर (उधम सिंह नगर) उत्तराखण्ड
Email: vinodbaoli@gmail.com

सारांश

सेवा क्षेत्र में शिक्षा (अध्यापन), चिकित्सा, बैंकिंग, बीमा, परिवहन, संचार, इंजीनियरिंग टाइपिस्ट, प्रशासनिक एवं सैनिक सेवाएं, समाज कल्याण, व्यापार आदि सम्मिलित किये जाते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सेवा क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का ग्रामीण अर्थव्यवथा के विकास में योगदान, योगदान के लिए प्रेरणा स्त्रोत, कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण एंव ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रूकावटों के कारणों को जानने के लिए हमने उत्तर प्रदेष के जनपद बागपत् को चुना है। सोउदेशय विचार पूर्ण निदर्शन प्रणाली के द्वारा जनपद में 4 विकास खण्ड एंव जनपद के कुल 314 गॉव में से 16 गावों (प्रत्येक विकास खण्ड से 4 गॉव) का चयन किया गया है। प्रत्येक विकास खण्ड से 104 महिलाओं का अर्थात कुल 416 महिलाओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर उनके योगदान को जानने का प्रयास किया है। साक्षात्कार से प्राप्त आकडों का वर्गीकरण एंव विश्लेषण कर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है। जनपद में सेवा क्षेत्र में योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 85.3ः पायी गयी हैं। शेष 14.7:, जो सेवा क्षेत्र में योगदान करती हैं, उनका अलग–अलग विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें 4.3ः पायी गयी हैं। सेवा (बीमा, बैंकिंग, परिवहन, संचार) क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें .7:, चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें 1.0:, समाज कल्याण क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें 1.0:, व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें 4.3:, अन्य क्षेत्र (ब्यूटी पार्लर, एस0टी0डी0 कूकिंग, दायी एवं दूसरों के यहाँ साफ–सफाई का कार्य) में योगदान देने वाली महिलायें 2.6ः पायी गयी हैं।

प्रस्तावना

सेवा क्षेत्र में शिक्षा (अध्यापन), चिकित्सा, बैंकिंग, बीमा, परिवहन, संचार, इंजीनियरिंग टाइपिस्ट, प्रशासनिक एवं सैनिक सेवाएं, समाज कल्याण, व्यापार आदि सम्मिलित किये जाते हैं।

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक व्यवस्था के क्षेत्र

में पुरुषों के समान सहभागिता पर लगाये गये परम्परागत प्रतिबन्धों तथा मुख्यतः पिछड़ी जातियों के ऊपर शिक्षा अर्जन करने पर लगाये गये प्रतिबन्धों को वैधानिक रूप से समाप्त कर दिया गया है। परिणामस्वरूप महिलायें समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी क्रिया की भूमिका का निर्वाह कर रही हैं।

सुलेरावट (1972) ने महिलाओं की स्थिति के निर्धारण में इनकी व्यवसायिक भूमिका के महत्त्व को विवेचित किया है, उनका कथन है कि महिलाओं का रोजगाररत होना उनकी सम्पन्नता का सूचक है न कि केवल इनके परिस्थिति गतिषीलता को स्पश्ट करता है।

सुपरा (1973) शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं पर लगाये गये परम्परागत प्रतिबन्ध एवं सीमित सामाजिक अन्तः क्रिया के कारण पिछड़ी जातियों तथा मुस्लिम समुदायों की महिलाओं में पिछड़ापन अधिक पाया जाता है, परन्तु वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था ने उन प्रतिबन्धों को धीरे–धीरे समाप्त कर दिया है और महिलायें शिक्षा जगत में सतत् प्रगति करती हुई अपना स्थान बना रही हैं।

मल्लिक (1979) का कथन है कि परम्परागत व्यवसाय से परे उठकर दूसरे व्यवसाय से संलग्नता यह स्पष्ट करती है कि व्यक्ति उर्ध्व विकास में है।

चन्द्रशेखरन, राजकुमारी एवं आशा सुकुमारन (1987) 18वी0 19वी0 शताब्दी में समाज सुधारकों के प्रयास और दृष्टिकोणों की पृष्ठभूमि पर स्वतन्त्र भारत में सभी के लिए शिक्षा की अनिवार्यता और कुछ क्षेत्रों में निःशुल्क शिक्षा इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। शिक्षा के माध्यम से सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं में पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति की महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित किये जाने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में महिलाओं के योगदान का अध्ययन किया है।
2. महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत का अध्ययन किया है।
3. महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है।
4. महिलाओं का क्षेत्र सेवा में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रुकावटों के कारण का अध्ययन किया है।
5. शोध अध्ययन से आवश्यक निष्कर्ष प्राप्त करना एवं प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर आवश्यक नीतिगत सुझाव प्रदान करना है।

शोध–प्रविधियां

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सेवा क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का ग्रामीण अर्थव्यवथा के विकास में योगदान, योगदान के लिए प्रेरणा स्त्रोत, कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण एंव ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में आयी रूकावटों के कारणों को जानने के लिए हमने उत्तर

प्रदेश के जनपद बागपत् को चुना है। सोउदेश्य विचार पूर्ण निदर्शन प्रणाली के द्वारा जनपद में से 6 विकास खण्ड बागपत्, बिनौली, बडौत, छपरौली, खेकडा एंव पिलाना में से 4 विकास खण्ड बागपत्, बडौत, छपरौली, एंव खेकडा जनपद के कुल 314 गॉव में से 16 गावों (प्रत्येक विकास खण्ड से 4 गॉव) का चयन किया गया है। प्रत्येक गॉव से 26 महिलाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार प्रत्येक विकास खण्ड से 104 महिलाओं का अर्थात कुल 416 महिलाओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर उनके योगदान को जानने का प्रयास किया है। साक्षात्कार से प्राप्त आकडों का वर्गीकरण एंव विश्लेषण कर निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकास में योगदान का विश्लेषण :

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 27.3% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं। सेवा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 3.0% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 1.1% महिलायें दबाव में योगदान करती पायी गयी हैं। चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 4.5% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 0.8% महिलायें मजबूरी में योगदान करती पायी गयी हैं। समाज कल्याण क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 9.1% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 0.8% महिलायें मजबूरी में योगदान करती पायी गयी हैं। व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 19.7% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में .8% महिलायें मजबूरी में योगदान करती पायी गयी हैं। अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 7.6% स्वेच्छा से योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 1.9% महिलायें दबाव में योगदान करती पायी गयी हैं। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0% जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में स्वेच्छा से 28.8% महिलायें, जो अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती है, लेकिन सेवा क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं।

प्रस्तुत तालिका के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा, सेवा, चिकित्सा, समाज कल्याण, व्यापार एवं अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें स्वेच्छा से अधिक योगदान करती पायी जाती हैं और सेवा क्षेत्र में योगदान नहीं करने वाली महिलायें, जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, अधिक पायी जाती हैं।

तालिका संख्या 1

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था विकास में योगदान का वितरण।

अर्थव्यवस्था में योगदान	सेवा क्षेत्र में योगदान							योग
	शिक्षा	*सेवा	चिकित्सा	समाज कल्याण	व्यापार	अन्य **	योगदान नहीं	
1. स्वेच्छा से	18 (27.3)	2 (3.0)	3 (4.5)	6 (9.1)	13 (19.7)	5 (7.6)	19 (28.8)	66 (100.0)
2. दबाव में		1 (1.1)			4 (3.8)	2 (1.9)	97 (93.3)	104 (100.0)
3. मजबूरी में			1 (0.8)	1 (0.8)	1 (0.8)	4 (3.2)	118 (94.4)	125 (100.0)
4. योगदान नहीं							121 (100.0)	121 (100.0)
योग	18 (4.3)	3 (0.7)	4 (1.0)	7 (1.7)	18 (4.3)	11 (2.6)	355 (85.3)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत का विश्लेषण :

तालिका संख्या 2 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 68.8% गुरुजनों की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 2.6% महिलायें मातृपक्ष एवं पितृपक्ष की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। सेवा क्षेत्र में योगदान देने वाली 18.7% महिलायें केवल गुरुजनों की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 6.3% गुरुजनों की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 1.3% महिलायें मातृपक्ष एवं पितृपक्ष की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। समाज कल्याण क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 10.2% आत्म चेतना के कारण योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 0.8% महिलायें ससुराल पक्ष की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 7.9% महिलायें मातृपक्ष एवं पितृपक्ष की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 6.1% महिलायें आत्म चेतना से योगदान करती पायी गयी हैं। अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 12.2% आत्म चेतना के कारण योगदान करती पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 4.0% महिलायें ससुराल पक्ष की प्रेरणा से प्रभावित होकर योगदान करती पायी गयी हैं। योगदान नहीं करने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0%, जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, पायी गयी है तथा सबसे कम अनुपात में आत्म चेतना

के कारण 63.6% महिलायें, जो अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती है, लेकिन सेवा क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं।

प्रस्तुत तालिका के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा, सेवा एवं चिकित्सा क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें गुरुजनों की प्रेरणा से प्रभावित होकर अधिक योगदान करती पायी जाती हैं। समाज कल्याण एवं अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें आत्म चेतना से अधिक योगदान करती पायी जाती हैं। व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें मातृपक्ष एवं पितृपक्ष की प्रेरण से प्रभावित होकर अधिक योगदान करती पायी जाती हैं तथा सेवा क्षेत्र में योगदान नहीं करने वाली महिलायें, जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, अधिक पायी जाती हैं।

तालिका संख्या 2

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं योगदान के लिए प्रेरणा स्रोत का वितरण

प्रेरणा स्रोत	सेवा क्षेत्र में योगदान							योग
	शिक्षा	*सेवा	चिकित्सा	समाज कल्याण	व्यापार	अन्य **	योगदान नहीं	
1. आत्म चेतना	4 (8.2)			5 (10.2)	3 (6.1)	6 (12.2)	31 (63.3)	49 (100.0)
2. मातृपक्ष एवं पितृपक्ष	2 (2.6)		1 (1.3)		6 (7.9)		67 (88.2)	76 (100.0)
3. ससुराल पक्ष			2 (1.6)	1 (0.8)	9 (7.1)	5 (4.0)	109 (86.5)	126 (100.0)
4. गुरुजन	11 (68.7)	3 (18.7)	1 (6.3)	1 (6.3)				16 (100.0)
5. अन्य	1 (3.6)						27 (96.4)	28 (100.0)
6. योगदान नहीं							121 (100.0)	121 (100.0)
योग	18 (4.3)	3 (0.7)	4 (1.0)	7 (1.7)	18 (4.3)	11 (2.6)	355 (85.3)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने के पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का विश्लेषण

तालिका संख्या 3 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 21.8% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "उत्साह था", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 2.4% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "डर था", पायी गयी हैं। सेवा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 3.6% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "उत्साह था", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 3.8% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने

से पूर्व, कार्य के प्रति "झिझक थी", पायी गयी हैं। चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 5.5% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "उत्साह था", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 3.8% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "अल्पायु के बच्चे", पायी गयी हैं। समाज कल्याण क्षेत्र मे योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 5.5% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "उत्साह था", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 4.9% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "डर था", पायी गयी हैं। व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 9.1% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "उत्साह था एवं पूर्ण भुगतान न होने की चिन्ता थी", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 3.8% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "अल्प आयु के बच्चे", पायी गयी हैं। अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 9.1% पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "पूर्ण भुगतान न होने की चिन्ता थी", पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 3.0% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व, कार्य के प्रति "आर्थिक एवं शारीरिक शोषण का भय था", पायी गयी हैं। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0% जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 49.1% महिलायें ऐसी पायी गयी हैं, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति "उत्साह था" जो अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती है, लेकिन सेवा क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं।

प्रस्तुत तालिका के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा, सेवा, चिकित्सा एवं समाज कल्याण क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति "उत्साह था", अधिक पायी जाती है, व्यापार क्षेत्र में योगदान देने वाली महिलायें, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति "उत्साह एवं पूर्ण भुगतान न होने की चिन्ता थी", अधिक पायी जाती हैं जबकि अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलायें, जिनमें कार्य करने से पूर्व कार्य के प्रति "पूर्ण भुगतान न होने की चिन्ता थी", अधिक पायी जाती हैं तथा सेवा क्षेत्र में योगदान नहीं करने वाली महिलायें, जो अर्थव्यवस्था के किसी भी क्षेत्र में योगदान नहीं करती, अधिक पायी जाती हैं।

तालिका संख्या 3

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं कार्य करने के पूर्व कार्य के प्रति दृष्टिकोण का वितरण

कार्य के प्रति दृष्टिकोण	सेवा क्षेत्र में योगदान							योग
	शिक्षा	*सेवा	चिकित्सा	समाज कल्याण	व्यापार	अन्य **	योगदान नहीं	
1. डर था	2 (2.4)			4 (4.9)	6 (7.3)	4 (4.9)	66 (80.5)	82 (100.0)
2. झिझक थीं	4 (7.4)	1 (1.9)			4 (7.4)		45 (83.3)	54 (100.0)
3. उत्साह था	12 (21.8)	2 (3.6)	3 (5.5)	3 (5.5)	5 (9.1)	3 (5.5)	27 (49.1)	55 (100.0)
4. अल्पायु के बच्चें			1 (3.8)		1 (3.8)		24 (92.4)	26 (100.0)
5. पूर्ण भूगतान न होने की चिन्ता					2 (9.1)	2 (9.1)	18 (81.8)	22 (100.0)
6. आर्थिक एवं शारीरिक शोषण का भय था						1 (3.0)	32 (97.0)	33 (100.0)
7. अन्य						1 (4.3)	22 (95.7)	23 (100.0)
8. योगदान नहीं							121 (100.0)	121 (100.0)
योग	18 (4.3)	3 (0.7)	4 (1.0)	7 (1.7)	18 (4.3)	11 (2.6)	355 (85.3)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करने में आयी रुकावट के कारणों का विश्लेषण

तालिका संख्या 4 से स्पष्ट होता है कि शिक्षा क्षेत्र में 6.1% सेवा क्षेत्र में 1.0% चिकित्सा क्षेत्र में 1.4% समाज कल्याण क्षेत्र में 2.4% व्यापार क्षेत्र में 6.1% एवं अन्य क्षेत्रों में 3.7% महिलाओं के सामने अर्थव्यवस्था में योगदान देने में कोई रुकावट नहीं आयी है। योगदान नहीं देने वाली महिलायें सर्वाधिक अनुपात में 100.0% के सामने मातृपक्ष एवं पितृपक्ष से ससुराल पक्ष से, बच्चों से एवं अन्य कारणों से रुकावट के कारण योगदान करती नहीं पायी गयी हैं तथा सबसे कम अनुपात में 79.3% महिलायें, जो अर्थव्यवस्था में तो योगदान करती हैं, लेकिन सेवा क्षेत्र में योगदान करती नहीं पायी गयी हैं।

प्रस्तुत तालिका के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शिक्षा, सेवा, चिकित्सा, समाज कल्याण, व्यापार एवं अन्य क्षेत्रों में योगदान देने वाली महिलाओं के सामने कोई रुकावट नहीं पायी जाती है तथा सेवा क्षेत्र में योगदान नही देने वाली महिलाओं के सामने मातृपक्ष एवं पितृपक्ष से, ससुराल पक्ष से, बच्चों से एवं अन्य कारणों से रुकावट पायी जाती है।

तालिका संख्या 4

सर्वेक्षित महिलाओं का सेवा क्षेत्र में योगदान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास करने में आयी रुकावट के कारणों का वितरण

रुकावट के कारण	सेवा क्षेत्र में योगदान							योग
	शिक्षा	*सेवा	चिकित्सा	समाज कल्याण	व्यापार	अन्य **	योगदान नहीं	
1. मातृपक्ष एवं पितृपक्ष से							10 (100.0)	10 (100.0)
2. ससुराल पक्ष से							77 (100.0)	77 (100.0)
3. बच्चों से							22 (100.0)	22 (100.0)
4. अन्य से							12 (100.0)	12 (100.0)
5. कोई रुकावट नहीं	18 (6.1)	3 (1.0)	4 (1.4)	7 (2.4)	18 (6.1)	11 (3.7)	234 (79.3)	295 (100.0)
योग	18 (4.3)	3 (0.7)	4 (1.0)	7 (1.7)	18 (4.3)	11 (2.6)	355 (85.3)	416 (100.0)

कोष्ठक में प्रतिशत अंकित हैं।

निष्कर्ष

सेवा क्षेत्र में योगदान नहीं देने वाली महिलायें अधिक पायी जाती हैं तथा योगदान देने वाली महिलायें बहुत कम पायी जाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 Chandrashekhran, Raj Kumari and Asha Sukumaran, 1987" Profiles of Education for Women in 2000 A.D. in Experiment in Education," Vol.XV No.2.

2 Malik, S. 1979. Social Integration of Scheduled Caste, Abhinav Publications, New Delhi, pp. **32-58.**

3 Sullerott,E.1972.Women Society and Change, World University Library, Weidenfeld and Nicalson, Winsley Street, London, W.J., p.**15.**

4 Supra Note 21, pp. **54-56.**